वरदान फिल्म महोत्सव

जीवन में उम्मीद का उत्सव

26 और 27 फरवरी, 2026

वरदान अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, 2026 ने सिनेमा को सामाजिक जागरूकता के सशक्त माध्यम में बदलते हुए देह दान और अंग दान जैसे संवेदनशील विषयों को नई मानवीय दृष्टि दी। दधीचि देह दान समिति द्वारा आयोजित इस अनोखे आयोजन में फिल्मों, संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और प्रेरक व्यक्तित्वों के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि जीवन केवल जीने का नहीं, बल्कि जीवन के बाद भी किसी के काम आने का नाम है।

एक ऐसी दुनिया में जहां, कहानियां दृष्टिकोण को आकार देती हैं और कार्रवाई के लिए प्रेरित करती हैं, **वरदान अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव** हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण मानवीय चर्चाओं-देह दान और अंग दान-को जनचेतना से जोडने वाला एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

26 और 27 फरवरी, 2026 को गुरु गोबिंद सिंह विश्वविद्यालय, ईस्ट दिल्ली कैम्पस में **दधीचि देह दान समिति** द्वारा आयोजित इस अनोखी पहल ने कला को परोपकार से, सिनेमा को करुणा से और कहानी कहने की शक्ति को सामाजिक जिम्मेदारी से जोडा।

दधीचि देह दान समिति मानवता और निस्वार्थ सेवा का प्रतीक संगठन है। महर्षि दधीचि के पौराणिक बलिदान से प्रेरित यह संस्था देह दान और अंग दान के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को मृत्यु के बाद अपने शरीर दान करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि चिकित्सा विज्ञान और प्रत्यारोपण के माध्यम से अनगिनत जीवन बचाए, संवारे और बेहतर बनाए जा सकें।

समिति जागरूकता फैलाने के लिए छोटे समूहों की बैठकों, दधीचि कथा, दधीचि यात्रा तथा वार्षिक क्षेत्रीय कार्यक्रमों का लगातार आयोजन किया जाता रहा है। अब फिल्म महोत्सव जैसे रचनात्मक मंचों के माध्यम से समिति दान के विषय पर सहज सामाजिक संवाद स्थापित करने का प्रयास कर रही है। हिचकिचाहट को आशा में और मिथकों को सार्थक कार्रवाई में बदलने का यह एक अत्यंत संवेदनशील और हृदयस्पर्शी प्रयास है।

वरदान के पीछे की सोच

वरदान अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव की शुरुआत एक सशक्त विचार से हुई-सिनेमा को सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में प्रयोग करना। ऐसे समय में जब दृश्य माध्यम विशेषकर युवाओं के संचार संसार पर गहरा प्रभाव रखते हैं, फिल्मों के माध्यम से कहानी कहना जागरूकता फैलाने के सबसे प्रभावशाली तरीकों में से एक बन गया है।

समाज को अधिक मानवीय बनाने की दिशा में पहल

रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से युवा पीढ़ी को जोड़ना।
अंग और देह दान जैसे संवेदनशील विषयों को सरल और मानवीय बनाना।
वास्तविक और काल्पनिक कथाओं के माध्यम से भावनात्मक जुड़ाव तैयार करना।
फिल्म निर्माताओं को सार्थक सामाजिक कारणों में योगदान देने के लिए प्रेरित करना।

वीडियो आधारित कहानी कहने की अपनी एक विशिष्ट शक्ति होती है। यह सीधे मन और हृदय से संवाद करती है। एक प्रभावशाली लघु फिल्म या डॉक्यूमेंट्री कुछ ही मिनटों में सहानुभूति जगा सकती है, गलत धारणाओं को चुनौती दे सकती है और लोगों को सकारात्मक काम के लिए प्रेरित कर सकती है। दाता और प्राप्तकर्ता की कहानियां जब दृश्य रूप में सामने आती हैं, तो उनका प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है। प्रभावशाली दृश्यों, आत्मीय पात्रों और भावनात्मक यात्राओं के माध्यम से सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह जाता, बल्कि वह एक सामाजिक आंदोलन का रूप ले लेता है। वरदान ने यह सिद्ध किया कि एक कहानी अनगिनत जीवनों को प्रेरित कर सकती है और जागरूकता को प्रतिबद्धता तथा इरादे को कार्रवाई में बदल सकती है।

फिल्म फेस्टिवल के लिए प्रेस कांफ्रेंस

(23 फरवरी, 2026)

इस प्रेस कांफ्रेंस का उद्देश्य वरदान फिल्म फेस्टिवल के प्रथम आयोजन के प्रति व्यापक जागरूकता फैलाना था। यह आयोजन अंग दान, देह दान और नेत्र दान जैसे विषयों को समर्पित विश्व का पहला फिल्म महोत्सव माना गया।

इस संवाद के माध्यम से आमजन को संवेदनशील बनाने, दान की आवश्यकता को रेखांकित करने तथा भारत और विदेशों से चयनित 62 फिल्मों के प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया, ताकि इस जीवनरक्षक अभियान को राष्ट्रीय जनआंदोलन का रूप दिया जा सके।

फिल्म महोत्सव की झलक

दो दिवसीय महोत्सव के दौरान लगातार फिल्म स्क्रीनिंग का सिलसिला चलता रहा, जिसने दर्शकों को अंग और देह दान जैसे अत्यंत संवेदनशील, मानवीय और सामाजिक महत्व के विषयों पर आधारित प्रभावशाली कथाओं से गहराई से जुड़ने का अवसर प्रदान किया।

लघु फिल्मों, डॉक्यूमेंट्री, प्रेरक दृश्य प्रस्तुतियों और सामाजिक संदेश देने वाले वीडियो के माध्यम से जीवन, मृत्यु, स्मृति, करुणा और मानवता के विविध आयामों को अत्यंत संवेदनशीलता और कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया। इन प्रस्तुतियों ने यह रेखांकित किया कि मृत्यु के बाद भी मनुष्य किसी दूसरे जीवन में उम्मीद और रोशनी का कारण बन सकता है।

प्रत्येक रचना ने दर्शकों को भावनात्मक रूप से स्पर्श करने के साथ-साथ समाज में अंगदान और देहदान के प्रति जागरूकता, सहानुभूति, नैतिक जिम्मेदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण को भी मजबूत किया। महोत्सव का वातावरण लगातार संवाद, विचार और आत्ममंथन से भरा रहा, जहां सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का माध्यम बनकर उभरा।

प्रतिष्ठित जूरी

जूरी पैनल में श्री रवि पराशर, श्री दीपक दूआ और श्रीमती मंजू प्रभा शामिल थीं।

श्री रवि पराशर – वरिष्ठ पत्रकार, जिनके पास नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, आज तक, जी न्यूज और पीटीआई सहित प्रमुख मीडिया संस्थानों में 35 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

श्री दीपक दूआ – राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्म समीक्षक, जो अनेक मीडिया मंचों और शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े रहे हैं।

श्रीमती मंजू प्रभा – उपाध्यक्ष, दधीचि देह दान समिति; समाजसेवी, शिक्षाविद् और अंग दान जागरूकता की सक्रिय प्रवर्तक।

जूरी का संदेश

जूरी सदस्यों ने समय की मांग के अनुरूप उपयोगी सामाजिक विषयों को आगे बढ़ाने में कहानी कहने की परिवर्तनकारी शक्ति पर बल दिया। उन्होंने कहा कि फिल्में और दृश्य कथाएं भय तथा गलत सूचनाओं को दूर कर सकती हैं, सहानुभूति को प्रेरित कर सकती हैं और विशेष रूप से युवाओं को अंग दान जैसे जीवनरक्षक विषयों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

उन्होंने फिल्म निर्माताओं से सामाजिक रूप से जिम्मेदार सामग्री तैयार करने का आह्वान किया, जो लोगों के दिलों को छू सके और वास्तविक जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सके।

मास्टरक्लास

श्री मनोज जोशी – प्रसिद्ध अभिनेता और रंगकर्मी, जिन्होंने कलाकारों की सामाजिक जिम्मेदारी पर बल देते हुए कहा कि सिनेमा का उपयोग सार्थक विषयों के लिए होना चाहिए।

श्री अनंत विजय – वरिष्ठ पत्रकार, लेखक और मीडिया विश्लेषक, जिन्होंने सामाजिक रूप से प्रासंगिक कहानी कहने और जिम्मेदार मीडिया की आवश्यकता को रेखांकित किया।

विशिष्ट उपस्थिति

महोत्सव में अनेक प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम के संदेश को और अधिक प्रभावशाली बनाया।

श्रीमती रेखा गुप्ता – माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली, ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि **वरदान** जैसी युवा प्रेरित जागरूकता मुहिम समाज में व्यापक परिवर्तन ला सकती हैं। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों से ऐसे अभियानों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

श्री हर्ष मल्होत्रा – राज्य मंत्री, भारत सरकार, ने राष्ट्रीय स्तर पर अंग दान जागरूकता को बढ़ाने में सामूहिक जिम्मेदारी पर बल दिया।

श्री नरेंद्र ठाकुर – अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, ने देह दान की सांस्कृतिक और मानवीय महत्ता को भारतीय परंपरा का महान उदाहरण बताया।

श्री मनोज जोशी – प्रसिद्ध अभिनेता, ने दोहराया कि कलाकारों और कहानीकारों की जिम्मेदारी है कि वे अपने कार्य के माध्यम से सार्थक सामाजिक परिवर्तन लाएं।

श्री आलोक कुमार – अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद तथा संरक्षक, दधीचि देह दान समिति, ने कहा कि अंग दान मानवता का सर्वोच्च रूप है। उन्होंने स्पष्ट किया कि **वरदान** केवल एक महोत्सव नहीं, बल्कि जागरूकता को संकल्प और संकल्प को सामाजिक आंदोलन में बदलने का प्रयास है।

श्री मनोज तिवारी – सांसद -लोकसभा, ने लोगों से इस महान उद्देश्य के लिए आगे आने का आग्रह करते हुए कहा कि सच्ची मानवता दूसरों को जीवन देने में निहित है।

डॉ. अनिल अग्रवाल – प्रसिद्ध हृदय प्रत्यारोपण सर्जन, ने चिकित्सा क्षेत्र के अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि एक दाता अनेक जीवन बचा सकता है और जागरूकता अंगों की मांग तथा उपलब्धता के बीच की दूरी को कम कर सकती है।

श्री अनंत विजय – वरिष्ठ पत्रकार और लेखक, ने जनधारणा को प्रभावित करने में मीडिया और कहानी कहने की भूमिका पर जोर दिया तथा महोत्सव की सराहना की।

सुश्री कीर्ति काले – हिन्दी कवयित्री, ने **देहदान देहदान देहदान कीजिए** गीत का लोकार्पण किया, जिसका उद्देश्य लोगों को देह दान के प्रति जागरूक करना है।

पद्मश्री से सम्मानित **श्री नीलेश मांडलेवाला** को नई दिल्ली में आयोजित **वरदान** अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, 2026 में विशेष रूप से सम्मानित किया गया। **दधीचि देह दान समिति** द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथियों ने 'ऑर्गन मैन ऑफ इंडिया' श्री नीलेश मांडलेवाला को स्मृति चिन्ह और सम्मान पत्र प्रदान कर आभार जताया।

वरदान अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, 2026

विजेता

लघु फिल्म श्रेणी:

सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म: काया – द मिशन ऑफ लाइफ

निर्माता: श्री नीलेश मांडलेवाला

प्रथम उपविजेता: थैंक यू जिंदगी
निर्देशक: श्री धीरज भटनागर
निर्माता: श्री सुनील कुमार

द्वितीय उपविजेता: उमंग
निर्देशक: श्री आलोक कुमार
निर्माता: कमोडोर वी. एम. स्वामी, श्री धूमिल चौहान, डॉ. इंद्रजीत तिवारी

विशेष उल्लेख: रीबॉर्न
निर्देशक: श्री आकाश मनोहर फुके

विशेष उल्लेख (कैम्पस): बियॉन्ड द फ्रेम
निर्देशक: सुश्री जिया गर्ग

डॉक्यूमेंट्री श्रेणी:

सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री: मिश्न सराठंडिंग किडनी डोनेशन
निर्देशक एवं निर्माता: श्री राहुल सूद

म्यूजिक वीडियो श्रेणी:
सर्वश्रेष्ठ म्यूजिक वीडियो: एक नजर
निर्देशक एवं निर्माता: श्रीमती रश्मि जैन

प्रथम उपविजेता: अंगदान कर ले रे मानव, तू ईश्वर बन जाएगा...
निर्माता: श्री नीलेश मांडलेवाला

विशेष उल्लेख: एक धडकन
निर्देशक: सुश्री मिहिका शर्मा

रील श्रेणी:
प्रथम उपविजेता: अंगदाता स्मारक
निर्देशक: श्रीमती वंदना चंदाना
निर्माता: श्रीमती भावना जगवानी

सर्वश्रेष्ठ रील वीडियो (कैम्पस): आई डोनेशन रील
निर्देशक: डॉ. टीना गर्ग

प्रथम उपविजेता (कैम्पस): लेटर टू माय डोनर

निर्देशक: सुश्री वान्या दहानिया और सुश्री मान्या पथानिया

प्रेरणादायक / जागरूकता श्रेणी:

प्रथम उपविजेता: टेस्टिमोनियल सैयद रफत

निर्देशक: श्री विशाल सेठी

सर्वश्रेष्ठ प्रेरणादायक वीडियो (कैम्पस): ऑर्गन डोनेशन रील

निर्देशक: सुश्री रिचा जैन

रचनात्मकता का जश्न

विजेता फिल्मों ने कई महत्वपूर्ण संदेश दिए:

अंग दान के माध्यम से मृत्यु के बाद भी जीवन जारी रह सकता है।

एक दाता अनेक जीवन बचा सकता है।

परिवार दाता की इच्छाओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जागरूकता भय, मिथकों और हिचकिचाहट को दूर करती है।

प्रत्येक कहानी आशा की आवाज बनकर उभरी और समाज को यह याद दिलाती रही कि मानवता जीवन की सीमाओं से परे भी जीवित रहती है।

युवाओं के लिए संदेश

बदलाव का दूत बनें

वरदान युवाओं को बदलाव का दूत बनने के लिए प्रेरित करता है। रचनात्मक ढंग से सिनेमा और डिजिटल मंचों का उपयोग करते हुए जागरूकता फैलाने और समाज को सकारात्मक कार्रवाई के लिए प्रेरित करने का संदेश देता है।

मनमोहक और आनंददायक प्रस्तुतियां

कार्यक्रम का समापन अत्यंत मनमोहक और आनंददायक प्रस्तुतियों के साथ हुआ, जिसने उपस्थित लोगों के चेहरों पर मुस्कान बिखेर दी। पद्मश्री सम्मानित अस्थाना बहनों-नलिनी और कमलिनी-की शिष्याओं द्वारा प्रस्तुत कथक नृत्य ने अपनी सुंदरता, भाव भंगिमा और सांस्कृतिक गरिमा से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद गजल और गीतों की लाइव प्रस्तुति श्री जजीम शर्मा ने दी, जिनकी मधुर आवाज ने पूरे वातावरण को सुरमय और भावपूर्ण बना दिया।

...और अंत में आभार

दधीचि देह दान समिति सभी सहयोगियों और योगदानकर्ताओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। विशेष धन्यवाद **दिल्ली सरकार** और **गुरु गोबिंद सिंह विश्वविद्यालय**, ईस्ट दिल्ली कैम्पस को, जिन्होंने इस पहल को सफल बनाने में अमूल्य सहयोग और सक्रिय भागीदारी दी।

तो आएं हम सब संकल्प लें-

आइए आज यह संकल्प लें कि हमारे एक दान से कल किसी अजनबी की आंखों में फिर उजाला लौटे, किसी घर की बुझती उम्मीद फिर जल उठे और किसी जीवन को नया सवेरा मिले।

याद रखें, अंगदान और देहदान की कहानियों में-

“ जीवन के बाद भी जीवन रहता है... ।”